UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 21 स्वतन्त्रता संग्राम की वीरांगनाएँ (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

रानी लक्ष्मीबाई- बचपन में लक्ष्मीबाई का नाम मनु था। चंचलता के कारण इन्हें सब प्यार से छबीली भी कहते थे। माता की मृत्यु के समय मनु चार-पाँच साल की थी। इनका बचपन पेशवा बाजीराव के पुत्रों के साथ व्यतीत हुआ। उनके साथ मनु ने तीर-तलवार चलाना, घुड़सवारी करना, बन्दूक चलाना आदि सीख लिये। मनु का साहस और कौशल देखकर लोग दंग रह जाते थे। मनु का विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ हुआ और इन्हें रानी लक्ष्मीबाई नाम दिया गया। रानी लक्ष्मीबाई स्त्री को अबला के स्थान पर सबला के रूप में देखती थीं। इन्होंने वीर, साहसी स्त्रियों की सेना का गठन किया और उन्हें प्रशिक्षण दिलाकर युद्धकला में निपुण बनाया।
रानी के एक पुत्र हुआ, जो कुछ महीनों के बाद गुजर गया। रानी ने पाँच वर्ष के बालक दामोदर राव को गोद ले लिया। गोद लेने के दूसरे दिन गंगाधर राव की बीमारी के कारण मृत्यु हो गई। अँग्रेजों ने राजा के पुत्र न होने के कारण झाँसी पर अधिकार कर लिया। रानी इससे नाराज हो गईं। इन्होंने संकल्प किया कि मैं अन्तिम साँस तक किले पर अँग्रेजों का अधिकार नहीं होने देंगी। शत्रु सेना ने झाँसी की सेना को घेर लिया। किले के रक्षक खुदाबख्श और तोपखाने के अधिकारी सरदार गुलाम गौस खाँ मारे गए। समय की गम्भीरता जानते हुए रानी ने कालपी जाने का निश्चय किया। सुरक्षित निकल जाने के लिए योजना में झलकारी ने प्रमुख भूमिका निभाई।

झलकारी बाई- रानी की सखी और हमशक्ल झलकारी बाई रानी के सेनानायक पूरन कोरी की पत्नी थी। उसमें देशप्रेम की भावना कूट-कूटकर भरी थी। उसने रानी के वेश में युद्ध करने के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया। रूप-रंग में समानता के कारण अँग्रेज भ्रमित हो गए और रानी को बच निकलने का मौका मिल गया। एक गद्दार द्वारा वास्तविकता मालूम होने पर अँग्रेज सैनिकों ने रानी का पीछा किया। झलकारी बाई को बन्दी बनाने के एक सप्ताह बाद छोड़ दिया गया। मातृभूमि और लक्ष्मीबाई की रक्षा के लिए समर्पित झलकारी बाई शौर्य और वीरता के कारण देशवासियों के लिए आदर्श बन गई।
कालपी की तरफ घोड़ा दौड़ाते हुए रानी की जाँघ में अँग्रेजों की एक गोली लग गई। मन्दगति हो जाने । पर शत्रुओं ने इन्हें घेर लिया। दोनों से भयंकर संघर्ष हुआ। विवशतावश रानी को युद्ध क्षेत्र छोड़ना पड़ा। संघर्ष के दौरान अँग्रेज घुड़सवार ने मुन्दर को मार दिया। रानी ने क्रोधित होकर उसे मृत्यु के घाट उतार दिया।
कालपी की ओर दौड़ाते हुए रानी का घोड़ा एक नाले को पार नहीं कर सका। इसी बीच अँग्रेज घुड़सवारों ने निकट आकर रानी के हृदय पर संगीन से वार किया। गम्भीर रूप में घायल रानी वीरतापूर्वक लड़ती रहीं। अन्ततः अँग्रेजों को रानी व उसके साथियों से हार मानकर मैदान छोड़ना पड़ा। घायल अवस्था में इनके साथी; रानी को बाबा गंगादास की कुटिया में ले गए। रानी के चेहरे पर दिव्य तेज था। ये वीरगति को प्राप्त हुई। क्रान्ति की यह ज्योति सदा के लिए लुप्त हो गई।

https://www.evidyarthi.in/